राखी

राखी का त्योंहार
पवित्रता की याद दिलाता
पवित्र दुनिया में हमें
जाने के लायक बनाता
मन में बसे सर्व विकारों
की मैल को मिटाता
मन आंगन में परमात्म
प्यार का फूल खिलाता
हर आत्मा से रूहानी
प्यार करना सिखाता
बाबा से प्यार का रिश्ता
मुझको अब निभाना
बाबा में खोकर मुझको
बाबा जैसा बन जाना
नहीं रहना एक पल भी
मुझे बिना उसकी याद
कर लेना है खुद को देह
के बन्धनों से आजाद
कलाई पर बाँधी पवित्रता
की प्रतिज्ञा की डोर
दूर नहीं वो दिन जब
होगी सतयुग की भोर